केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

डी-०१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५००४

पद्म श्री पुरस्कार

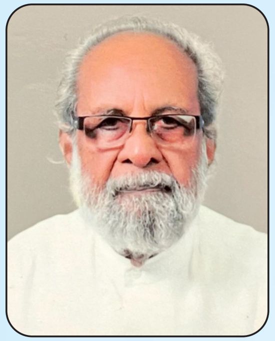

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर एक प्रख्यात हिंदी विद्वान और 42 वर्षों तक केरल हिंदी साहित्य अकादमी , तिरुवनंतपुरम, केरल के संस्थापक अध्यक्ष रहे थे। डॉ. नायर 10 जनवरी 2022 (विश्वहिंदी दिवस) को 99 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हो गये।

डॉ एन .चन्द्रशेखरन नायर तिरुवनंतपुरम के महात्मा गांधी कॉलेज में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष थे। डॉ नायर यू जी सी के मेजर रिसर्च फेलो रहे थे। 1976- 2010 के दौरान, डॉ. नायर को केंद्र सरकारको विभिन्न मंत्रालयों की 14 हिंदी सलाहकार समितियों में "सलाहकार" के रूप में नामित किया गया था। 1989-93 के दौरान डॉ. नायर को केरल के राज्यपाल द्वारा केरल विश्वविद्यालय में "सेनेटर" के रूप में नामित किया गया था। उन्होंने हिंदी प्रचार के लिए कई अन्य अकादमिक समितियों के अलावा हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति के अध्यक्ष के रूप मेंभी कार्य किया और केरल के कई प्रांतों में एन.एस.एस कॉलेजों के हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी रहे थे।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। ओट्टपालम, पालघाट में, उन्होंने गांधीवादी जीवन शैली और उनके सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज की स्थापना की। उन्हें गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष के रूप में भी नामित किया गया था।

डॉ. एन .चन्द्रशेखरन नायर का जन्म शास्तांकोट्टा, कोल्लम, केरल में एक मध्य वर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करके हाई स्कूलों में 4 साल पढ़ाने के बाद, डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर 1951 में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हिंदी प्राध्यापक बन गये। डॉ. नायर ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए तथा बिहार विश्व विद्यालय से पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

डॉ. नायर एक प्रखर गांधीवादी थे,जो हिंदी प्रचार-प्रसार को अपना धर्म और गांधीजी के प्रति अपनी भक्ति मानते थे। डॉ नायर भारत के गैर-हिंदी भाषी दक्षिणी राज्य, केरल में राष्ट्रीय एकता के लिए अपने कर्म के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में संलग्न रहे थे। 16 साल की उम्र में भी वह केरल के विभिन्न हिस्सों के ग्रामीण इलाकों में हिंदी पढ़ाते थे। डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर ने साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी अध्ययन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए 1980 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना की। पिछले 42 वर्षों से, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी संगोष्ठियाँ और कार्यशालाओं का आयोजन करके, उच्च गुणवत्ता वाले शोध के लिए प्रकाशन और त्रैमासिक पत्रिका "शोध पत्रिका" निकालकर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभारही है। अकादमी हिंदी साहित्य और अनुसंधान के क्षेत्र में पूरे भारत की हस्तियों को सम्मानित कर रही है। अकादमी पुरस्कार, अच्छे हिंदी प्रकाशन निकालने के लिए युवाओं का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, आदि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रही है।

डॉ. नायर ने अपने भवन में एक संसाधनपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया था जो शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध है। छात्रों और अन्य शोधकर्ताओं को अपने शोध और शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए यह पुस्तकालय सदा कर्मरत है।

डॉ नायर के मार्गदर्शन में छह शोधार्थियों ने पीएच.डी.प्राप्त की है। समय के साथ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने केरल में हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल बनाया। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनुदान प्राप्त है। अकादमी 180 से अधिक हिंदी लेखकों, विशेषकर भारत के विभिन्न हिस्सों के युवा लेखकों को सम्मानित किया है। अकादमी के प्रकाशन, विशेषकर "शोधपत्रिका" राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन ब उच्च स्तरीय हिन्दी पीएच.डी. प्रबंध के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की। 2018 में पहला पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार जो 50000/- रुपये का है, इसमें प्रशस्ति पत्र और प्रमाण पत्र हर साल दिया जाता है। डॉ.नायर ने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ प्रबंध प्रस्तुति के लिए स्कूली छात्रों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए।

डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम के बहुभाषी लेखक थे। एक सफल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, शोध निदेशक, चित्रकार, आलोचक के रूप में डॉ.नायर प्रसिद्ध हैं। डॉ. नायर ने हिंदी में 50 से अधिक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कई पुस्तकों को भारतीय विश्वविद्यालयों ने पाठ्यपुस्तकों के रूप में चुन ली है। विख्यात लेखकों की अनेक सुप्रसिद्ध कृतियों की आलोचना भी प्रस्तुत की है। भारत और विदेशों में 800 से अधिक पत्रिकाओं में डॉ नायर के लेख प्रकाशित हो गये। यौगिक जीवन जीने वाले डॉ. नायर ने उपनिषद, अध्यात्म रामायण, चिरंजीव, राम-मारुति मिलन, राम की स्तुतियाँ, श्री ललिता सहस्रनाम व्याख्याएँ आदि जैसे महान ग्रन्थों पर आधारित कई धार्मिक प्रकाशनकार्य किये थे। डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर ने सौ से अधिक पेंटिंग बनाई थीं। स्वागत जैसी इंडियन एयरलाइंस पत्रिका में डॉ. नायर के कई चित्र प्रकाशित हुईं। उनके कई चित्र तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में प्रदर्शित हुए।

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर को 12 सितंबर, 2015 को भोपाल में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्व गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह से "विश्व हिंदी सम्मान" प्राप्त हुआ। उनके जीवनकाल के योगदान को मान्यता देते हुए पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने डॉ. नायर को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। डॉ. नायर को 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में भी सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया था।

2020 में, डॉ. चंद्रशेखरन नायर को हिंदी भाषा, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में उनकी असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए यूको बैंक द्वारा यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान (वर्ष 2019-20) से सम्मानित किया गया था। 2018 में, डॉ. नायर को पीएसयू. -रत्नों द्वारा टोलिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 2014 में डॉ. नायर को हिंदी भवन, नई दिल्ली द्वारा "हिंदी रत्न सम्मान" और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा "देशरत्न" से सम्मानित किया गया। डॉ. नायर को 2004-05 के लिए गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी लेखकों के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार मिला। उन्हें 2005 में भारत के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से 1 लाख रुपये का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार, "गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान" और 2008 में महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को कई प्रमुख भारतीय हस्तियों जैसे स्वर्गीय श्री नरसिम्हा राव, पूर्व वित्त मंत्री, वित्त मंत्री, भारत सरकार, महामहिम श्री बी राचौया, केरल के पूर्व राज्यपाल और श्री लाल कृष्ण आडवाणी, से "अभिनंदन ग्रंथ" प्राप्त हुआ। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को मदन मोहन मालव्य, विवेकानन्द, प्रेमचंद, एजुथाचन, केशवदेव कवि मुल्ला दाऊद, महर्षि विद्याधि राजा, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी आदि जैसे भारतीय विद्वानों और नेताओं के नाम पर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता थे। उन्हें प्रतिष्ठित संगठनों-स्थानों द्वारा स्थापित कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और पुरस्कार प्राप्त हुए। 2020 में, डॉ एन चंद्रशेखरन नायर को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान और सेवा की मान्यता के रूप में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया था।

पद्मश्री डॉ एन चंद्रशेखरन नायर के आवास के सामने से होकर लक्ष्मीनगर तक जानेवाली सड़क का नामकरण नगर निगम ने "पद्मश्री डॉ एन चंद्रशेखरन नायर रोड" कर दिया।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के जीवन-विजय के पीछे उनकी अर्धांगिनी श्रीमती टी.शारदा जी का बड़ा योगदान रहा है। वे केरल के सुविख्यात सर्वोदय नेता प्रो.एम.पी.मन्मथन जी की सुपुत्री हैं। उनके तीन संतानें हैं बड़ा बेटा शरत चन्द्रन (दिवंगत) बेटियाँ श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन तथा डॉ.एस सुनंदा।

PADMA SHRI DR. N. CHANDRASEKHARAN NAIR

Padma Shri Dr N Chandrasekharan Nair was an eminent Hindi Scholar and the Founder and Chairman of the Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA), Thiruvananthapuram, Kerala for 42 years. Dr Nair passed away at the age of 99 years on 10th January 2022 (Vishwa Hindi Divas).

Dr N Chandrasekharan Nair was the former Head of the Department of Hindi at Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram. Dr Nair was Awarded D.Lit., Major Research Fellow of U.G.C and Emeritus Professor of U.G.C. During 1976-2010, Dr. Nair was nominated in 14 Hindi Salahkar Samitees of various Central Government Ministries as "Salahkar" (Advisor) to the Ministers, Govt. of India. During 1989-93 Dr Nair was nominated as a "Senator" to the University of Kerala by the Governor of Kerala. He served as the Chairman of the Hindi Text Book Committee besides so many other academic Committees for Hindi Promotion and was also the Head of the Hindi Department of NSS Colleges in many parts of Kerala.

Dr. N. Chandrasekharan Nair (Dr N C Nair) was actively involved in social activities. In Ottapalam, Palghat, he established Gandhi Vigyan Bhavan and Bharat YuvakSamaj to promote the Gandhian way of life and his principles. He was nominated as the Chairman of the Gandhi Centenary Committee.

Dr N C Nair was born in Sasthamkotta, Kollam, Kerala in a middle-class family. After completing his studies and 4 years of teaching in high schools, Dr N C Nair joined as a Lecturer in Hindi at the Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram in 1951. Dr Nair got M.A. Degree in Hindi from Banaras Hindu University and a Ph.D. from Bihar University. Dr. Nair pursued vigorously both academics as well as his literary works along with a routine teaching career in the colleges for more than 3 decades.

Dr Nair was a strong Gandhian, who took Hindi Propagation as his Dharma and his devotion to Gandhiji. For 77 years, he has promoted Hindi in a non-Hindi-speaking Southern State of India, Kerala as his mission for National Integration. Even at the age of 16, he used to teach Hindi in rural villages in different parts of Kerala. Dr N.C Nair established the Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA) in 1980 to promote Hindi studies and national integration through literary and cultural activities. For the last 43 years, KHSA has been playing a proactive role in promoting the Hindi language by organising Seminars and workshops, bringing out Publications & Periodical Magazine "Sodha Pathrika" undertaking high-quality Research, honouring personalities all over India in Hindi literature and Research with Awards and Recognitions, training and capacity building of youth in bringing out good Hindi publications, etc. Dr Nair had instituted a resourceful library in his house which is enabling Ph.D. students and other researchers to pursue their research and academics. Six Professors have obtained Ph.D. Degrees in the works of Dr N C Nair. Over a period of time, KHSA created a congenial atmosphere for the promotion of Hindi Literature in Kerala. KHSA has been recognised by the Central Hindi Directorate through Grants. It has honoured more than 180 Hindi writers, especially youth from different parts of India. Academy's publications, especially the periodical "Shodh Patrika" are nationally and internationally renowned.

Dr N Chandrasekharan Nair instituted an Award for the best Hindi Ph.D. Thesis in Kerala in 2018. The Award which is of Rs 50000/-, Citation and Certificate is given every year. He also instituted Cash Awards to school students for their best performance in Hindi.

Dr N Chandrasekharan Nair was a prominent writer both in Hindi and Malayalam. He was renowned as a Poet, Novelist, Dramatist, Story writer, Research Scholar, A well-known artist in painting and a critic in both the art subject and literary field. Dr Nair has written more than 50 original books in Hindi. Many of his books have been selected as textbooks by the Indian Universities. Gave "Preface" to many well-known works of noted writers. Dr Nair published articles in more than 800 periodicals in India and abroad. Dr Nair who was leading a Yogic life had many religious publications and works based on Upanishad, great epics like Adhyatma Ramayan, Chiranjeevi, Ram-Maruti Milan, Praises of Ram, Sree Lalitha Sahasranam Vyakhyaye, etc. Dr N C Nair had drawn more than a hundred paintings. A number of paintings of Dr. Nair were published in Indian Airlines magazines like Swagath. Many of his paintings were exhibited at Thiruvananthapuram and New Delhi.

Dr N Chandrasekharan Nair was the recipient of numerous awards and honours. He received several National and State Awards and Awards instituted by Eminent Organisations / Institutions. In 2020, Dr N Chandrasekharan Nair was conferred one of the highest civilian honours of India, "Padma Shri" as a recognition of his distinguished contribution and service in the field of Literature and Education.

Dr N C Nair received the prestigious "Vishva Hindi Samman" from the former Home Minister, Shri Rajnath Singh at the 10th Vishva Hindi Samelan hosted by the Ministry of External Affairs, Government of India in Bhopal on September 12th, 2015. Recognizing his lifetime contribution to the propagation of Hindi all over the world, the Ministry of External Affairs – Government of India conferred the Vishva Hindi Samman to Dr Nair. Dr Nair was also honoured and awarded at the third World Hindi Conference held in 1983 in New Delhi.

In 2020, Dr Chandrasekharan Nair was honoured by the UCO Bank by awarding UCO Bharathiya Bhasha Souhard Samman (Year 2019-20) for his exceptional and distinguished service in promoting the Hindi language, literature and education. In 2018, Dr Nair was honoured by PSUs / Navaratnas with the TOLIC Award. In 2014, Dr Nair was awarded "Hindi Ratna Samman" by the Hindi Bhawan, New Delhi and "Desh Ratna" by the Uttar Pradesh Government. Dr Nair received the Ministry of Human Resource Development's award for Hindi writers in non-Hindi speaking areas for 2004-05. He received the prestigious national award, "Ganesh Shankar Vidyarthi Samman" of Rs 1 lakh from the late former President of India, Dr A P J Abdul Kalam in 2005 and the Maharashtra Hindi Sahitya Academy award in 2008.

Thiruvananthapuram Nagar Sabha has honoured Dr N Chandrasekharan Nair for his life time contributions to society by naming the road in front of his house and Academy in Lakshmi Nagar as "Padma Shri Dr N Chandrasekharan Nair Road" in October 2024.

Dr N Chandrasekharan Nair received "Abhinandan Grandhas" from many prominent Indian personalities like the Late Sri Narasimha Rao, Former Finance Minister, Minister of Finance, Govt of India, His Excellency, Mr B Rachaiah, Former Governor of Kerala and Sri Lal Krishna Advani, Former Minister for Communication, Govt of India. Dr N Chandrasekharan Nair was given awards in the name of Indian scholars and leaders like Madan Mohan Malavya, Vivekananda, Premchand, Ezhuthachan, Kesavasuth, Poet Mulla Dawood, Maharshi Vidhyadhi Raja, Sri Ganesh Shankar Vidhyarthi, etc.

Behind the success of Dr. N. Chandrasekharan Nair's life, his wife late Smt. T. Sarada has made a big contribution. She was the daughter of late Sarvodaya leader of Kerala, Prof M. P. Manmathan. They have three children: elder son, Mr C. Sarat Chandran (late), two daughters, Mrs. Neeraja Rajendran and Dr. S Sunanda.

विश्व हिन्दी सम्मान

गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान

हिन्दीरत्न सम्मान

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार समर्पण

2018

2019

2020

2021

2022

2023

2024

2025

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार केरल के विश्वविद्यालयों से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंधों में से सर्वश्रेष्ठ हिन्दी शोध प्रबंध के लिए पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर (संस्थापक – पूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) द्वारा दिया जाने बाला पुरस्कार है। 50,000 रुपये, स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र का यह पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। वर्ष 2018 से यह पुरस्कार प्रदान दिया जा रहा है।

केरल हिन्दी
39-ാം വാർഷിക

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का पुस्तक विमोचन

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका

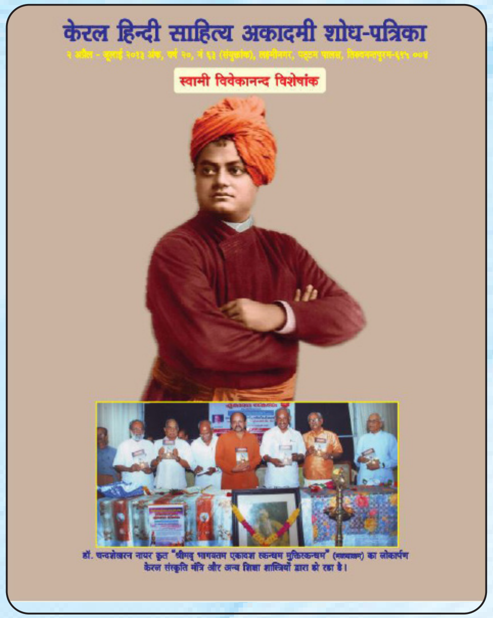

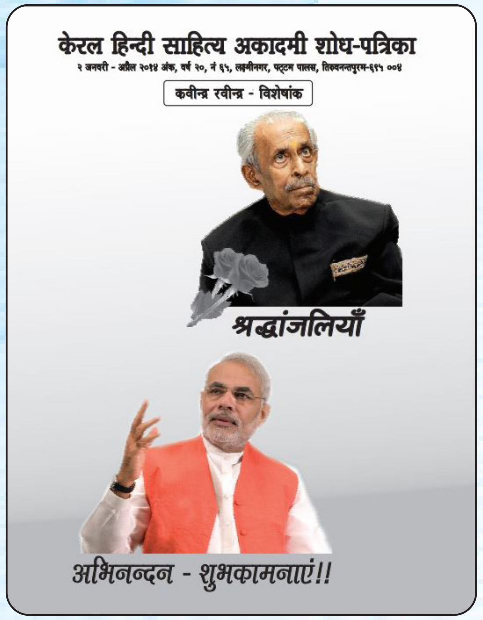

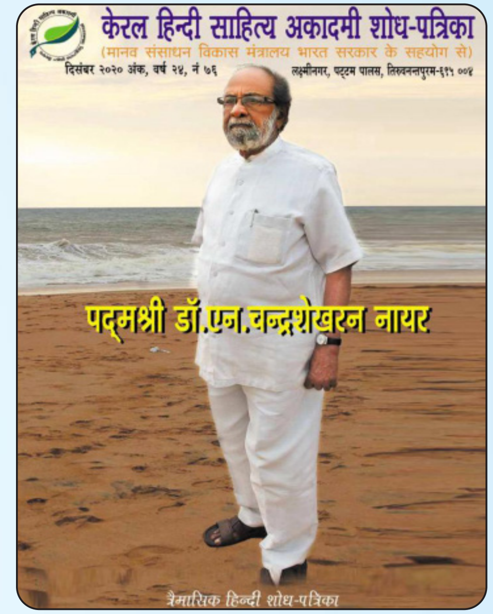

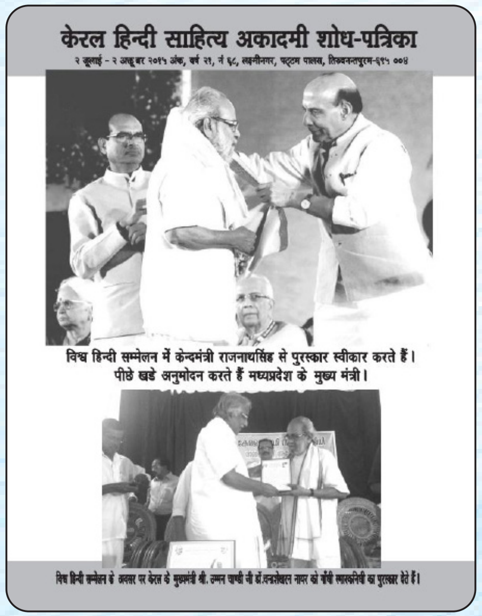

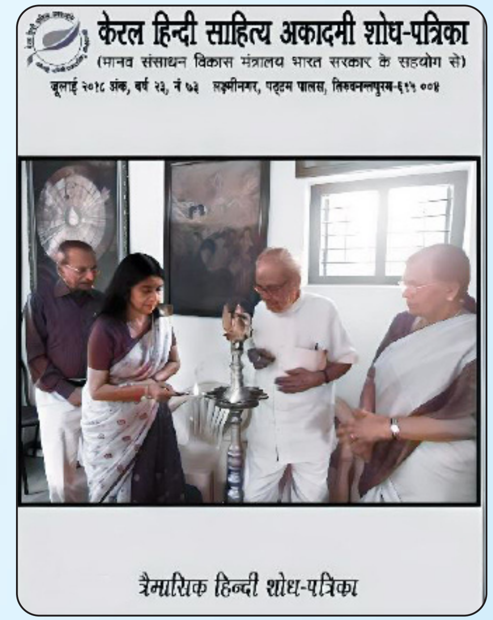

डॉ.एन.सी नायर की चित्रकला

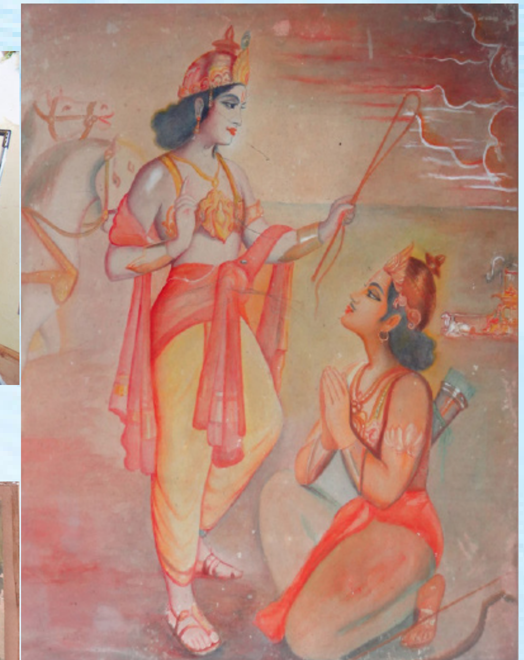

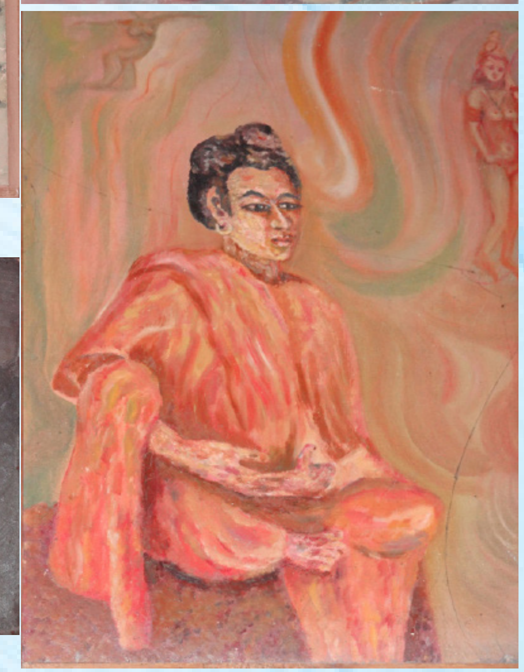

डॉ.एन.सी नायर की चित्रकला

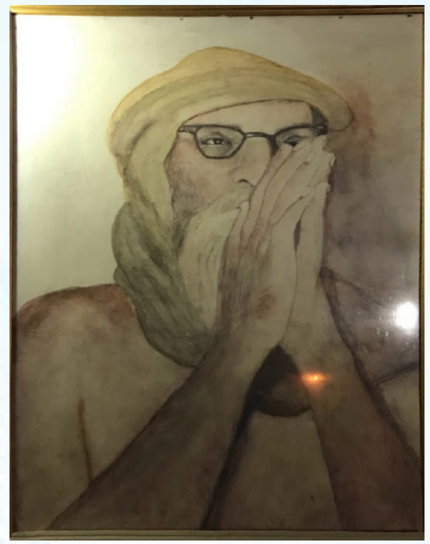
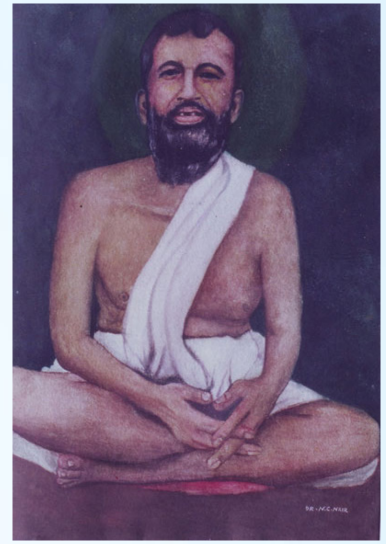

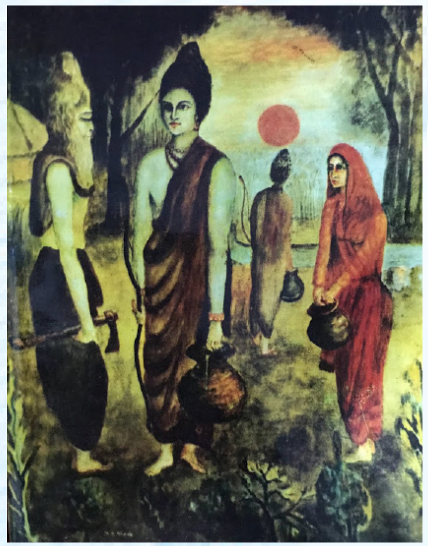
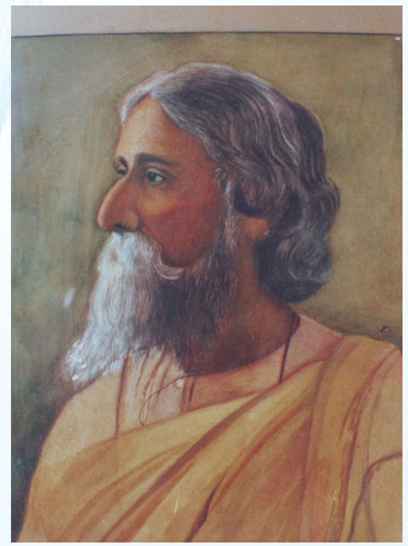
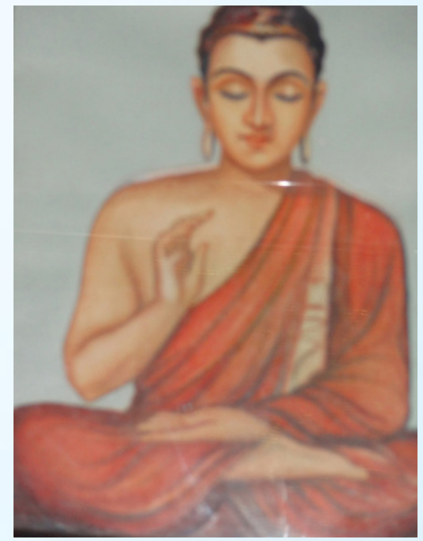
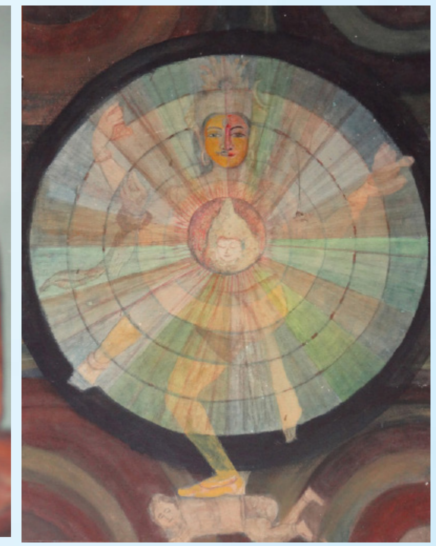

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा ज़ारी है !!

केरल हिंदी साहित्य अकादमी दक्षिण भारत की ख्याति प्राप्त स्वैच्छिक हिंदी संस्था है जो केरल प्रांत की राजधानी तिरुवनंतपुरम में कार्यरत है। अब इस संस्था का दिगंत व्यापी विस्तार हो रहा है और यह अकादमी पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रही है। केरल के साहित्य, सांस्कृतिक जगत के महामेरु, बहुमुखी प्रतिभावान हिंदी मलयाळम साहित्यकार, भाषा शास्त्री, चित्रकार डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी के नेतृत्व में सन् 1980 में स्थापित यह संस्था भारत की भावात्मक एकता एवं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार रूपी अपने महान लक्ष्य के मंजिल की ओर तेज रफ्तार में आगे बढ़ रही है।

सन् 1980 में अपने दो चार मित्रों के सहयोग से डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने 'केरल हिंदी साहित्य परिषद्' नामक एक संस्था को जन्म दिया और 24-09-1980 सायंकाल में इस संस्था का औपचारिक उद्घाटन वी.जे.टी हॉल (अब श्री.अय्यंकाळि हॉल) में केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री.ई.के.नायनार ने किया। आगे के दो वर्षों में संस्था पल्लवित और पुष्पित हुई, बहुविध कार्यकलापों के आयोजन में अभूतपूर्व सफलता भी हासिल की। फिर सन् 1982 में इस परिषद का पंजीकरण (पंजीकरण संख्या 277/2) केरल हिंदी साहित्य अकादमी नाम से हुआ। इस अकादमी का उद्घाटन और संस्था का वार्षिक सम्मेलन एक साथ संपन्न हुआ। अकादमी का उद्घाटन दिनांक 5 अक्तूबर 1983 में यानी गाँधी जयंती सप्ताह के अवसर पर, तीर्थपाद मंडप में केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री. करुणाकरन के करकमलों से संपन्न हुआ। वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटक रहे केंद्र के तत्कालीन परिवहन मंत्री ज़ियाउर रहमान अन्सारी।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना के पीछे के महान लक्ष्य को साकार बनाने केलिए संस्थापक ने इसकी नियमावली को अनेक कार्यकलापों से सुसज्जित किया और उन्हें निभाने का अथक परिश्रम किया। भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को बनाए रखना, योग्य पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन, हिंदीतर प्रदेशों में रचित हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शिनी, दक्षिण भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रंथों का शोधपरक अध्ययन, भाषाई, सांस्कृतिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों का आयोजन, तुलनात्मक अध्ययन में रत अकादमी के सदस्यों केलिए प्रोत्साहन, पुरस्कार, आदर एवं सम्मान, दक्षिण के उत्कृष्ट साहित्यकारों को उपाधियाँ प्रदान करना, अकादमी की ओर से मुद्रणालय की स्थापना, पत्रिका का प्रकाशन, शैक्षणिक, सांस्कृतिक यात्रा हेतु वित्तीय सहायता, दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक अध्ययन, लेन-देन, भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद, उदीयमान लेखकों का प्रोत्साहन एवं उनकी रचनाओं का प्रकाशन जैसी विशाल लक्ष्यवाली नियमावली के तहत संस्था सतत विकास की ओर अग्रसर है।

अकादमी के महान लक्ष्य की पूर्ति में संस्थापक ने अपने जीवनकाल में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी। संस्थान ने पिछले 44 वर्षों में हिंदी और मलयाळम भाषा की गतिविधियों पर अनेकानेक संगोष्ठियों और परिसंवादों का आयोजन किया। सन् 1989 में प्रकाशित डॉ. नायर जी द्वारा प्रणीत 'केरल के हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास' हिंदी जगत केलिए अकादमी की एक महत्वपूर्ण देन है। अकादमी के कार्यकलापों और प्रगति पर श्री.जी.आर.मधु का शोधकार्य और सन् 2022 में श्री रंजीत रविशैलम के संपादकत्व में 'श्री चंद्रशेखरम' शीर्षक में प्रकाशित पद्मश्री नायरजी का स्मृति ग्रंथ भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

पद्मश्री.डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर जी ने अकादमी के कार्यकलाप को एकदम अनूठा स्थापित करते हुए सन् 2018 में केरल के विश्वविद्यालयों में से हिंदी में पीएच.डी उपाधि प्राप्त शोध प्रबंधों से सर्वोत्कृष्ट शोध प्रबंध का चयन कर उसे पचास हज़ार (50000) रुपए का 'डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार' का शुभारंभ किया। यह पुरस्कारसन् 2018 में एन.एस.एस.हिंदू कॉलेज, चंङ्ङनाशेरी के हिंदी विभाग की सह आचार्या डॉ.रेणु.एस.एस और 2019 में महाकवि जी मेम्मोरियल एन.एस.एस कॉलेज अंकमालि की अध्यापिका डॉ.रेमी को मिला था। 2020-2021-2022 के पुरस्कार क्रमशरू डॉ.सुप्रिया.के.पी, डॉ.के.वी.रंजिता रानी और डॉ.लक्ष्मी. एस.नायर को मिले हैं। 2023 का पुरस्कार डॉ.दिलना.के को मिला।

डॉ.जे.अजिता कुमारी सन् 2024 के पुरस्कार से विभूषित हुई। सन् 2025 में यह पुरस्कार डॉ.आतिरा बाबु को मिला। यह तो नयी पीढ़ी केलिए प्रोत्साहनजनक बात है, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं सर्वांगीण विकास की दिशा का एक नया कदम है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी भवन

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा ज़ारी है !!

केरल जैसे हिंदीतर प्रांत के स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों की सृजनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देने केलिए डॉ.नायर जी ने कविता, कहानी, लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता आदि का आयोजन करके उनमें विजय प्राप्त करनेवालों को पुरस्कार प्रदान करने का कार्यक्रम भी शुरू किया।

2025 में कॉलेजीय छात्र-छात्राओं और शोध छात्रों केलिए संगोष्ठियाँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। विजयी छात्रों का पुरस्कार वितरण अकादमी के वार्षिक समारोह 28 दिसंबर 2025 को, यानी दिवंगत पद्मश्री डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर जयंती के अवसर पर संपन्न हुआ था।

इस प्रकार दिवंगत पद्मश्री डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर द्वारा 1980 में स्थापित, केरल हिंदी साहित्य अकादमी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी अध्ययन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की दिशामें मार्गदर्शक रही है। पिछले 45 सालों में, अकादमी ने सक्रिय रूप से सेमिनारों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों और प्रकाशनों का आयोजन किया है, जिससे अकादमी को केंद्रीय हिंदी निदेशालय से मान्यता प्राप्त हुई है। अकादमी ने 200 से ज़्यादा हिंदी विद्वानों को सम्मानित किया है और 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका' शीर्षक पत्रिका के माध्यम से केरल में एक जीवंत हिंदी साहित्यिक समुदाय को बढ़ावा देने का सराहनीय कार्य भी किया है।

10 जनवरी 2022 को, विश्व हिंदी दिवस के दिन संस्थापक पद्मश्री नायरजी के स्वर्गवास के बाद माँ सरस्वती के इस वरद पुत्र की जाज्वल्यमान आत्मा की प्रेरणा से एक कार्यकारिणी समिति के नेतृत्व में संस्था आगे बढ़ रही है। केरल के उच्चन्यायालय के न्यायमूर्ति श्री.एम.आर.हरिहरन नायर के संरक्षण में तथा केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की पूर्व अध्यक्षा एवं लेखिका डॉ.एस. तंकमणि अम्मा की अध्यक्षता में अब संस्था कार्यरत है। पद्मश्री चंद्रशेखरन नायर जी की सुपुत्री डॉ.एस.सुनंदा संस्था की महासचिव का दायित्व बखूबी निभा रही है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की अपनी मुख पत्रिका है, 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका' जिसका श्रीगणेश सन् 1996 में अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी के संपादकत्व में हुआ था। केरल की कला, साहित्य और संस्कृति को हिंदी के माध्यम से बढावा देना ही पत्रिका का उद्देश्य था। इसी लक्ष्य की उद्घोषणा करते हुए 'साहित्य अकादमी के इतिहास' के प्रकाशन के संदर्भ में संपादक नायरजी का कथन मैं मानता हूँ कि अकादमी के मुख पत्र 'शोध पत्रिका' के माध्यम से आसेतु हिमाचल हमारी संस्कृति एवं भावधारा को सुस्थापित रखा जा सकता है और इस प्रयास में अपनी ढलती अवस्था को पुनर्जीवित रख सकता हूँ।(केरल हिंदी साहित्य अकादमी सन् 1980 से 18-08-1999 तक का इतिहास जी.आर.मधु)

नायरजी के ब्रह्मलीन होने के बाद सन् 2024 में प्रो.डॉ.एस.तंकमणि अम्मा के संपादकत्व में पद्मश्री डॉ.चंद्रशेखरन नायरजी के कृति. त्व को समेटते हुए पत्रिका निकाली गयी और 28 दिसंबर 2024 को अकादमी के वार्षिक समारोह में उसका लोकार्पण हुआ। पिछले 44 वर्षों से धूम मचाती आगे बढती पत्रिका के 2025 अंक कालोकार्पण 28 दिसंबर 2025 को संपन्न हो गया।

इस प्रकार केरल हिंदी साहित्य अकादमी विविध साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यकलापों द्वारा केरल जैसे हिंदीतर प्रांत में अपनी विजय वैजयंती फहरा रही है।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की विविध गतिविधियाँ

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की विविध गतिविधियाँ

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की विविध गतिविधियाँ

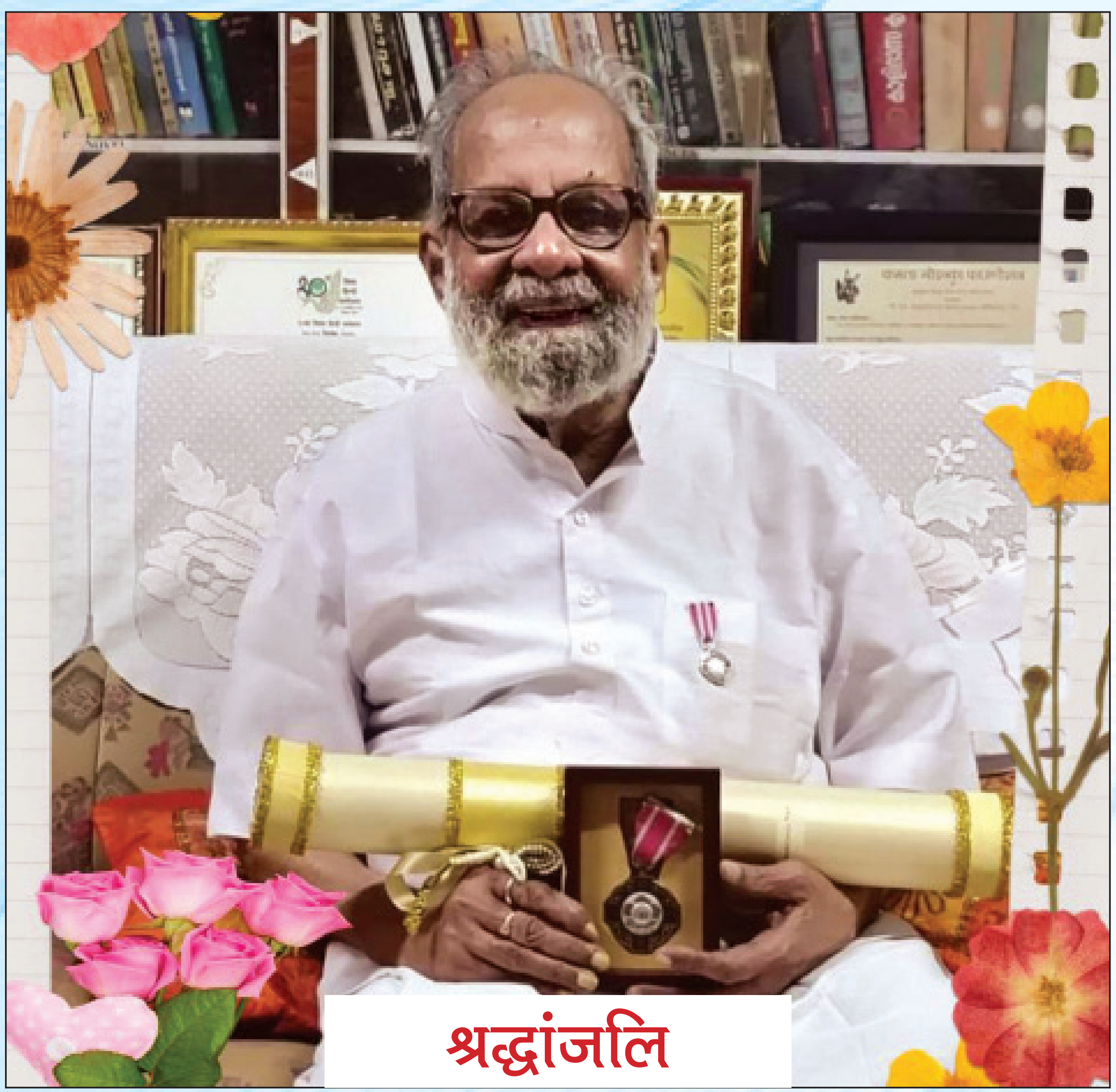

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर 10–01–2022 को 99 वर्ष की आयु में बहालीन हुए थे। उनकी अंतिम विदाई के दौरान केरल सरकार का "गार्ड ऑफ ऑनर" एवं अन्य साहिंत्यिक – सांस्कृतिक व्यक्तित्वों से यथोचित श्रद्धांजलियाँ प्राप्त हुई।

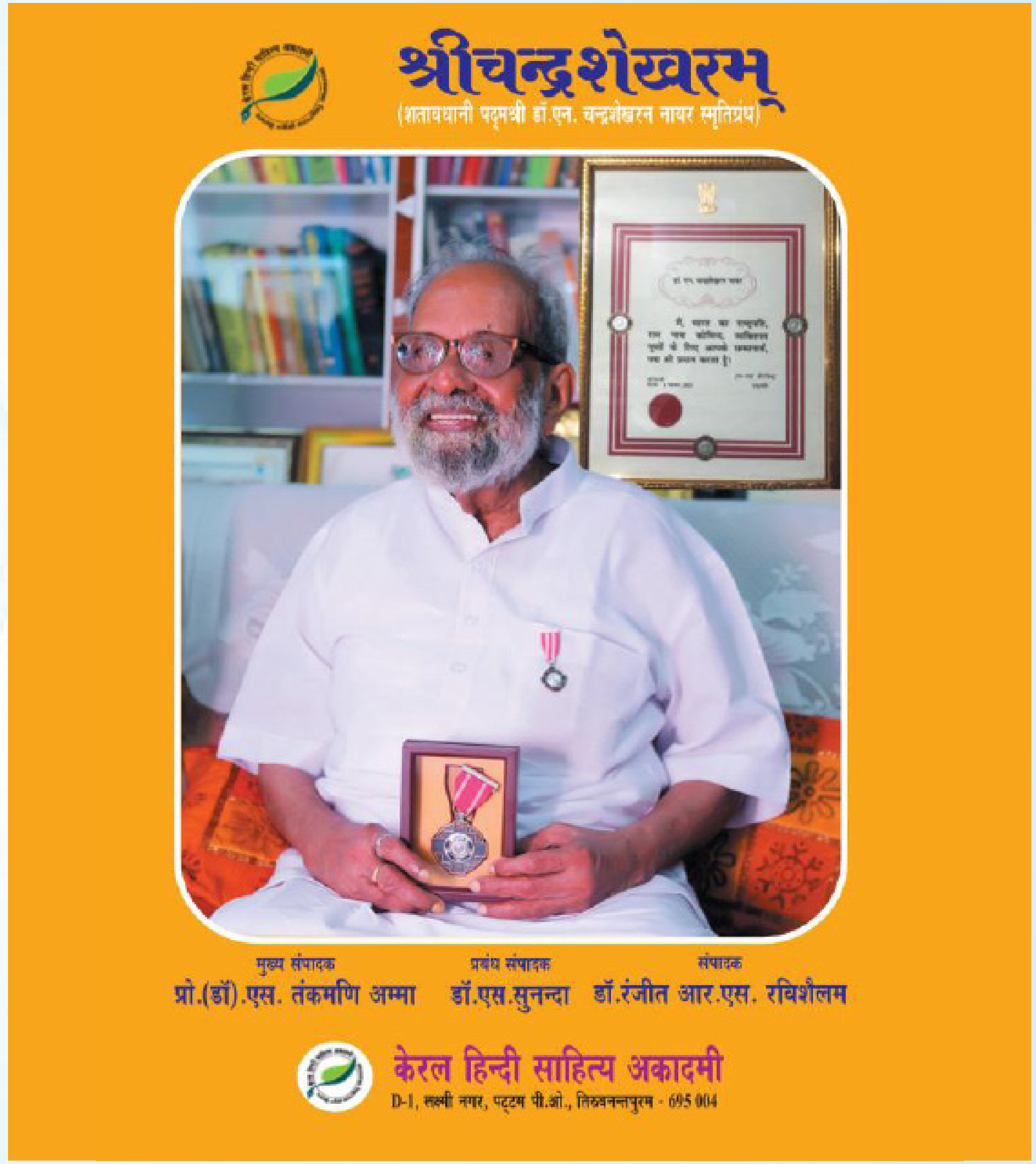

"पद्मश्री डॉ एन चंद्रशेखरन नायर रोड" उद्घाटन समारोह

पद्मश्री डॉ एन चंद्रशेखरन नायर के आवास के सामने से होकर लक्ष्मीनगर तक जानेवाली सड़क का नामकरण नगर निगम ने "पद्मश्री डॉ एन चंद्रशेखरन नायर रोड" कर दिया।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का 42 वाँ वार्षिक सम्मेलन
डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार (2022) समर्पण
दिवंगत पद्मश्री डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर 100 वाँ जन्मदिन समारोह - 28-12-2022

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का 43 वाँ वार्षिक सम्मेलन
डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार (2023) समर्पण
दिवंगत पद्मश्री डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर 101 वाँ जन्मदिन समारोह - 28-12-2023

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का 44 वाँ वार्षिक सम्मेलन
डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार (2024) समर्पण
दिवंगत पद्मश्री डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर 102 वाँ जन्मदिन समारोह - 28-12-2024

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का 45 वाँ वार्षिक सम्मेलन
डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार (2025) समर्पण
दिवंगत पद्मश्री डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर 103 वाँ जन्मदिन समारोह - 28-12-2025

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

डी-०१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५००४

संपर्क - डॉ. एस.सुनन्दा (महासचिव)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, डी-१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

Mobile: 8800095639 | E-mail: sarada.sunanda@gmail.com | keralahindisahityacademy@gmail.com

Websites: www.drnchandrasekharannair.in |www.keralahindisahityaacademy.com